अध्याय एक

पारिवारिक पृष्ठभूमि

''हे अरुणाचल! तुम और मैं इस तरह से एकाकार और अपृथक हो जाएं जैसे अलगु और सुंदरम!''

– द मैरिटल गारलैंड ऑफ़ लैटर्स, अंक 2

नटराज के रूप में भगवान शिव के दिव्य नृत्य-उत्सव, यानी आरुद्रा दर्शनम् के दिनों के आयोजन के दौरान सोमवार, 30 दिसंबर 1879 की अर्ध रात्रि के एक घंटे उपरांत एक पुरातन व प्रतिष्ठित ब्राह्मण के घर में एक बालक का जन्म हुआ जो आगे चल कर विश्व में श्री भगवान रमण महर्षि के रूप में विख्यात हुआ। पुराणों के अनुसार, इस दिन भगवान शिव अपने प्रिय भक्तों, गौतम और पतंजलि, के समक्ष प्रकट हुए थे, इसलिए यह दिन हमेशा ही एक शुभ दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। सुन्दरम और अलगु के घर में जन्मे इस स्वस्थ बालक का नाम उनके कुल देवता के नाम पर वेंकटरमण रखा गया।

वेंकटरमण के पिता सुन्दरम तमिलनाडु में तिरुचुली नगर के मंदिर में कोर्ट-प्लीडर के रूप में नियुक्त थे और एक उच्च प्रतिष्ठित

Supreme_Guru_Sri_Raman_Maharshi_February_2016_Hindi.indd 1 2/18/2016 11:14:27 AM

व सम्पन्न ब्राह्मण थे। उनके तीन पुत्रों में वेंकटरमण दूसरे स्थान पर थे। सुन्दरम के पिता, नागस्वामी अय्यर, गोथ्रम वंश से थे जो कि ऋषि पराशर से चला आ रहा था और उसी में महान ऋषि व्यास का भी जन्म हुआ था। नागस्वामी के पांच पुत्र थे – वेंकटेश्वरन, सुन्दरम्, सुब्बैयब और नेल्लियप्प अय्यर, और एक पुत्री थी जिसका नाम था लक्ष्मी अम्माल। अपने पिता के देहान्त के उपरान्त वेंकटेश ने कुछ समय तक परिवार की ज़िम्मेदारी को वहन किया लेकिन फिर वह सन्यासी हो गए। तब दूसरे पुत्र सुन्दरम् ने परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली थी।

वेंकटरमण की माता का नाम अलगम्माल था जो कि बाद में अपने ही सत् से अध्यात्म की बहुत उच्च स्थिति तक पहुंच गई थीं। यह इत्तफ़ाक नहीं तो और क्या है कि माता और पिता दोनों के ही नाम का अर्थ है 'सुन्दर', माता का तमिल में और पिता का संस्कृत में। तिरुचुली एक पावन स्थान है और इसकी पुष्टि पुराणों में भी की गई है जहां कि एक के बाद एक आने वाली जलप्रलय सरीखी तीन बाढ़ों से इस नगर को बचाने के लिए भगवान शिव चमत्कारिक रूप से स्वयं आगे आए थे।

वेंकटरमण के माता और पिता दोनों ही भगवान शिव के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा के लिए विख्यात थे। उनकी माता को अनेक ऐसे भजन आते थे जो कि अद्वैत के सत्य से सराबोर होते थे। उन भजनों को गाने के लिए ईश्वर ने उन्हें बहुत आंनददायी सुरीला स्वर भी प्रदान किया था। अपने इस पुत्र के जन्म से जुड़े सूत्र जोड़ते हुए उन्होंने बताया था कि गर्भावस्था के दौरान उनके पेट में बहुत ही असाधारण दर्द होता था। इसका अर्थ यह निकाला जाता था कि कोई तेजस्वी उनके गर्भ में आया है। उन दिनों लोग उन्हें बताते थे कि उनमें एक ऐसी द्युति व दीप्ति दीखती थी जो

Supreme_Guru_Sri_Raman_Maharshi_February_2016_Hindi.indd 2 2/18/2016 11:14:27 AM

वेंकटरमण के पिता सुन्दरम् अय्यर

वेंकटरमण की माता अलगम्माल

कि पहले उनमें कभी दिखाई नहीं दी थी। इस बालक के जन्म के समय दाई ने एक चौंधिया देने वाले प्रकाश को महसूस किया था। उस अद्‌भुत दृश्य को देख कर उसने अलगम्माल से कहा था, ''आज जिसने तुम्हारे घर में जन्म लिया है वह कोई दिव्य आत्मा है!'' उसकी इस बात ने उस समय बड़े अचरज और अटकल का वातावरण बना दिया थाः लेकिन यह एक ऐसी भविष्यवाणी थी जो कि बालक के बड़े होने के साथ-साथ पूरी होती चली गई।

वेंकटरमण का लालन-पालन उनके बड़े भाई नागस्वामी और सुन्दरम् की स्वर्गीय बहन लक्ष्मी अम्माल के दो बच्चों, रामस्वामी और मीनाक्षी के साथ हुआ था।

1892 को कम उम्र में ही सुन्दरम् अय्यर का देहांत हो गया और अपने पीछे वे तीन पुत्र और एक पुत्री छोड़ गए – चौदह वर्ष का नागस्वामी, बारह वर्ष के वेंकटरमण, छः वर्ष का नागसुन्दरम् और चार वर्ष की अलमेलु। आगे आने वाले पृष्ठों में हम देखेंगे कि किस प्रकार इस कुलीन परिवार ने वेंकटरमण का उल्लेखनीय और ऐतिहासिक भवितव्य रचने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

Supreme_Guru_Sri_Raman_Maharshi_February_2016_Hindi.indd 4 2/18/2016 11:14:34 AM

अध्याय दो

बचपन

''हे अरुणाचल, जन्म लेने वाले समस्त जीव जो तेरे निकट कुछ पल भी रह जाते हैं, वे मुक्त हो जाते हैं। यह आश्चर्यजनक है! इस हृदय में तू ही आत्मस्वरूप 'मैं' के रूप में नर्तन करता है। हे प्रभु, ये सब लोग तुझे ही 'हृदय' कहते हैं।''

– अरुणाचल पंचरत्नम्, अंक 2

बालक वेंकटरमण का बचपन किसी भी अन्य बालक के बचपन की भांति ही सामान्य तौर पर बीता। वह एक सुडौल देह वाला हृष्ट-पुष्ट लड़का था, और पांच वर्ष का होने तक वह अपनी ममतामयी माता का दुग्धपान करता रहा था।

उनके साथ एक चचेरी बहन, मीनाक्षी, भी रहा करती थी जिसकी मां अब नहीं रही थी। वेंकटरमण की मां उसे भी अपना दुग्धपान कराया करती थी। यह बात बाद में पता चली कि बालक वेंकटरमण ने अपनी चचेरी बहन मीनाक्षी की दुर्भाग्यपूर्ण असामयिक मृत्यु के समय एक बार तो उसे पुनः जीवित कर दिया था। यह बालक उसके पास गया और उसे छुआ। वह उठ बैठी और चकित

Supreme_Guru_Sri_Raman_Maharshi_February_2016_Hindi.indd 5 2/18/2016 11:14:35 AM